C-3 B.Ed- 1st Year (2019-2021)

# बाल-केन्द्रित शिक्षा
# Child-Centred Education

बाल-केन्द्रित शिक्षा का आशय ऐसी शिक्षा से है जिसमे समस्त शैक्षिक गतिविधियो का केन्द्र बालक होता है और इसमे शिक्षा बालक के लिए होती है न कि बालक शिक्षा के लिए। बाल केन्द्रित शिक्षा की धारणा के अनुसार विभिन्न शैक्षिक स्तरो पर पाठ्यक्रम बालको की आवश्यकताओ, रुचियो, प्रवृत्तियो क्षमताओ, सामाजिक और आर्थिक पर्यावरण, सामाजिक जीवन से सामंजस्य स्थापित करने आदि मुख्य बातो पर आधारित होता है, जिसके फलस्वरूप बालक का स्वाभाविक रूप से उपयुक्त पर्यावरण में सर्वांगीण विकास होता है और उसे अत्यन्त आत्मीय, सौहार्द्रपूर्ण, लोकतांत्रिक परिस्थितियो मे अपनी आवश्यक दक्षताए, ज्ञान, दृष्टिकोण और मूल्य प्राप्त करने के पर्याप्त अवसर मिलते है। बालक अपने पूर्वानुभव के आधार पर समस्याओ का हल निकालकर आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वासी और स्वावलम्बी बनता है। उसके शिक्षण और जीवन अनुभवों के मध्य कोई खाई नही रहती वरन् निरन्तरता और क्रमबद्धता बनी रहती है। ऐसी स्थिति मे बालक अपना क्रमिक विकास अत्यन्त स्वाभाविक रूप से करते हुए अपनी पूर्ण क्षमता को प्राप्त करने मे समर्थ बनता है जिसके लिए उसकी शिक्षा का आयोजन किया जाता है।

शिक्षाशास्त्रियो ने बाल केन्द्रित शिक्षा के सम्बन्ध मे अपने मत व्यक्त करते हुए कहे है कि सामान्यतः बालको की आवश्यकताओ को सर्वाधिक महत्वपूर्ण समझा जाना चाहिए। बाल-केन्द्रित शिक्षा ही ऐसी शिक्षा होती है जिसमे बालक स्वतः ही सीखने की क्षमता अर्जित कर लेता है। बाल केन्द्रित शिक्षा वह होती है जिसमे छात्र शिक्षक सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण रहते है तथा इस शिक्षा मे दृश्य-श्रव्य साधनो (Audio-visual aids) साधन का उपयोग होता है।

यह भी सर्वमान्य सत्य है कि बाल-केन्द्रित शिक्षा मे अधिकतर मनोवैज्ञानिक विधि से अध्यापन होता है।

Scanned with CamScanner

C-3 B.Ed - 1st Year (2019-2021)

# शिक्षक - केन्द्रित शिक्षा
# Teacher - Centred Education

शिक्षक जिन मूलभूत बिन्दुओं के आधार पर अध्यापन कार्य को सम्पादित करता है उसे ही उस अध्यापक विशेष की केन्द्रित शिक्षा कहा जाता है। दूसरे अर्थों मे शिक्षक केन्द्रित शिक्षा वह होती है जो अध्यापक द्वारा अपने विषय विशेष के महत्वपूर्ण बिन्दुओं के आधार पर छात्रों को दी जाती है अर्थात अध्यापक अपने विषय का ज्ञाता होता है और उस विषय से सम्बन्धित बिन्दु के विषय में छात्रों को पूर्ण जानकारी प्रदान करके उन्हे सन्तुष्ट करने की कोशिश करता है।

यह भी कहा जा सकता है कि शिक्षक अध्यापन के दौरान जिन क्रिया कलापों अथवा गतिविधियों का प्रयोग करता है वे सभी गतिविधियां ही उसकी केन्द्रित शिक्षा होती है। अच्छे और आदर्श शिक्षक अपने विषयों के साथ-साथ बालकों का ध्यान व्यावहारिक एवं उनके कौशल विकास की ओर भी आकर्षित करते है। छात्रों में आत्मनिर्भरता एवं आत्मविश्वास जागृत करते है।

शिक्षक केन्द्रित शिक्षा मे शिक्षक शिक्षा के में होता है तथा विद्यार्थी गौण होते है। शिक्षक इस शिक्षा व्यवस्था मे सक्रिय रहता है और विद्यार्थी निष्क्रिय रहते है। विद्यार्थियों को कठोर अनुशासन मे रहना पड़ता है। शिक्षा का प्रवाह एक ही दिशा मे होती है। शिक्षक केन्द्रित शिक्षा मे प्रजातान्त्रिक प्रजातान्त्रिक मूल्यों का ध्यान नहीं दिया जाता है।

Scanned with CamScanner

C-3 B.Ed 1st Year (2019-2021)

# क्रिया आधारित या गतिविधि आधारित शिक्षण
# Activity Based Teaching

परम्परागत शिक्षण प्रणाली में क्रियापरक शिक्षण पर जरा भी ध्यान नहीं दिया जाता था तथा अध्यापक द्वारा छात्र के मस्तिष्क में पुस्तकीय ज्ञान को ठूंस-ठूंसकर भरने का प्रयास किया जाता था। इस शिक्षण विधि का कामेनियस ने विरोध किया तथा छात्र क्रियाशीलता के सिद्धान्त पर विशेष बल दिया। रूसो को इस सिद्धान्त का प्रवर्तक कहा जाता है। रूसो का कथन है कि "यदि आप अपने छात्र की बुद्धि का विकास करना चाहते हैं तो उस शक्ति का विकास करना चाहिए, जिसे उसको नियन्त्रित करना है। उसको बुद्धिमान और तर्कपूर्ण बनाने के लिए उसे हष्ट पुष्ट और स्वस्थ बनाना होगा।"

क्रियापरक विधि का अर्थ है- छात्र का अपनी स्वयं की क्रिया के द्वारा ज्ञान प्राप्त करना। छात्र की क्रिया से तात्पर्य है कि जिस क्रिया को छात्र किसी उद्देश्य से पूर्ण करता है और उसको पूर्ण करने में उसका शरीर और मस्तिष्क दोनों क्रियाशील रहते हैं। इस आधार पर यह ज्ञात होता है कि छात्र की क्रियाएं दो प्रकार की होती हैं- शारीरिक तथा मानसिक।

क्रियात्मक विधि का प्रयोग पाठ्यक्रम के सभी विषयों के शिक्षण के लिए किया जा सकता है। इस विधि में सभी बच्चे क्रियाशील होकर अधिगम लक्ष्यों की ओर अग्रसर होते हैं। इस विधि के अनुप्रयोग में समय को भी ध्यान में रखना होगा। इसमें बालकों द्वारा किये गये कार्य में शीघ्रता होनी चाहिए तथा सब बालकों को एक समय में एक ही क्रिया करनी चाहिए।

क्रियात्मक विधि की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि यह विधि विषय केन्द्रित और शिक्षक केन्द्रित न होकर बाल केन्द्रित है।

Scanned with CamScanner

C-3. B.Ed 1st Year (2019-2021)

# गतिविधियों पर आधारित शिक्षण विधि
# Activity Based Teaching Method

इस विधि में विभिन्न गतिविधियों तथा क्रियाकलापों के उपयोग से शिक्षण कार्य सम्पन्न किया जाता है। गतिविधियों के उपयोग से शिक्षण क्रिया सरल-साधिकर तथा बोधगम्य हो जाती है। इन गतिविधियों तथा क्रियाकलापों को शिक्षक द्वारा निर्मित करना पड़ता है तथा इसमें कक्षा के सभी छात्रों को समाहित करते हैं।

गतिविधियाँ विभिन्न प्रकार की हो सकती हैं —

1- छात्रों को कई समूहों में बाँटकर विषय से सम्बन्धित विषय कराकर।
2- समूह चर्चा के द्वारा
3- स्थलीय भ्रमण कराकर
4- प्रयोग कराकर
5- चार्ट या माडल दिखाकर लिखने को कहकर
6- अवलोकन कराकर
7- सूची बनवाकर
8- चार्ट बनवाकर आदि।

वास्तव में गतिविधियों की कोई निश्चित सूची नहीं होती। शिक्षक अपने विवेक से इन गतिविधियों को आयोजित करता है।

**गतिविधि (क्रियाविधि) का प्रयोग :—** क्रियात्मक या क्रियापरक विधि का स्थान कक्षा-कक्ष और इसका साधन सामूहिक शिक्षण होता है। क्रियात्मक विधि का प्रयोग पाठ्यक्रम के सम्पूर्ण विषयों के शिक्षण के लिए किया जाता है। क्रियात्मक विधि का

Scanned with CamScanner

प्रयोग करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि पाठ को समाप्त करने मे निर्धारित समय से अधिक समय न लगे। एक ही कक्षा के सम्पूर्ण छात्रो को एक समय मे एक ही कार्य करना चाहिए, जैसे - एक ही कक्षा के छात्र किसी माडल का निर्माण कर रहे है तो सभी छात्रो को एक ही प्रकार का माडल बनना चाहिए।

**गतिविधि आधारित शिक्षण विधि के सिद्धान्त :-** क्रियापरक विधि इस सिद्धान्त को प्रतिपादित करती है कि छात्र को ज्ञान प्राप्ति हेतु स्वतन्त्रता प्रदान करनी चाहिए।

1- क्रियापरक विधि आत्म स्वतन्त्रता के सिद्धान्त को महत्वपूर्ण मानती है। इसके अनुसार आत्म स्वतन्त्रता की प्राप्ति हेतु आत्मक्रिया करना आवश्यक होता है।

2- इस विधि के द्वारा छात्र का चहुमुखी विकास अपनी स्वयं की क्रिया के द्वारा सम्पन्न होता है।

3- इस विधि के माध्यम से छात्र सहज प्रवृत्तियो की ओर प्रेरित होकर ज्ञान अर्जन करते है।

4- यह विधि मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त पर आधारित है। यह छात्र की क्रिया चेतना के तीनो स्तरो को प्रभावित करती है - (i) चिन्तनात्मक (ii) रचि संकल्पना (iii) निर्णय

Scanned with CamScanner

G-3 (B.Ed. 1st Year (2019-2021)

# रुचिपूर्ण या आनन्दमयी शिक्षण
# Interested Based Teaching

प्राथमिक शिक्षा मे परम्परागत शिक्षण विधियो, विद्यालय का अनाकर्षक तथा अरुचिपूर्ण वातावरण तथा क्रियाकलाप विहीन पाठ्यक्रम आदि ने बालक को विद्यालय से दूर कर ह्रास एवं अवरोध जैसी समस्याओं को जन्म दिया है और शिक्षण के सार्वजनीकरण का जो लक्ष्य हमें स्वतन्त्रता प्राप्ति के 10 वर्ष बाद ही प्राप्त कर लेना चाहिए था, वो हम 62 वर्षों मे भी प्राप्त नहीं कर पाये। अतः शिक्षा के सार्वजनीकरण एवं उपलब्धि की सम्प्राप्ति सुनिश्चित कराने हेतु शिक्षा विभाग ने वर्ष 1994 मे प्राथमिक शिक्षक संघ उत्तर प्रदेश के सहयोग से यूनीसेफ वित्त पोषित रुचिपूर्ण शिक्षा कार्यक्रम शुरू किया है।

रुचिपूर्ण शिक्षण एक समयबद्ध कार्यक्रम तथा सुविचारित रणनीति है। यह बालको को शिक्षा देने हेतु आकर्षक एवं बाल केन्द्रित प्रणाली है जिसमे बालको को आनन्दित करने वाले क्रियाकलाप एवं विद्यालय में छात्र के प्रति शिक्षक का द्वेष रहित, मित्र रहित तथा आत्मीय व्यवहार है। यह गीतो, कहानियो तथा खेलो द्वारा सरस गतिविधि प्रधान बाल केन्द्रित शिक्षण है। इस प्रकार रुचिपूर्ण शिक्षण एक रणनीति है। एक विधा है जो शिक्षण को रोचक एवं प्रभावी बनाकर शिक्षा के सार्वजनीकरण के लक्ष्य प्राप्ति मे सहायक होगी।

शि रुचिपूर्ण शिक्षण के उद्देश्य :— रुचिपूर्ण शिक्षा

Scanned with CamScanner

का लक्ष्य ज्ञान एवं व्यवहार की दूरी को समाप्त कर शिक्षा को जीवन से जोड़ना है। इसके प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं -

1- बालकों का नामांकन, ठहराव तथा गुणात्मक शिक्षा की सम्प्राप्ति

2- विद्यालय का बाह्य एवं आन्तरिक सौन्दर्यीकरण करके, उसे एक आनन्दमयी क्रिया के रूप में विकसित करना

3- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को क्रियाकलाप आधारित बनाकर प्रत्येक बालक की सहभागिता सुनिश्चित करना

4- शिक्षक को एक मित्र एवं सहयोगी के रूप में कार्यरत करना

5- स्वनिर्मित एवं स्थानीय परिवेश में उपलब्ध सामग्री को शिक्षण सहायक सामग्री के रूप में प्रयुक्त करना

6- शिक्षकों की आपसी समझ और सहयोग की भावना को प्रोत्साहित कर उनकी बौद्धिक, सृजनात्मक एवं कलात्मक दक्षताओं का समुचित उपयोग करना।

Scanned with CamScanner

C-3 B.Ed 1st Year (2019-2021)

# उपचारात्मक शिक्षण
# Remedial Teaching

शिक्षा की आधुनिक अवधारणा में जहाँ शिक्षा बाल केन्द्रित शिक्षा हो चुकी है तथा शिक्षण का स्थान अधिगम ने ले लिया है; शिक्षा जगत में एक और संकल्पना विकसित हुई है जिसे व्यापक तथा सतत् मूल्यांकन कहते है। यह शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के साथ साथ इसके विभिन्न अंग के रूप में चलता रहता है।

Scanned with CamScanner

इसका लक्ष्य यह ज्ञात करना होता है कि —

1- बच्चा अपने स्तर के अनुरूप सीख रहा है या नहीं

2- सीखने के मार्ग में कौन-कौन सी कठिनाइयाँ आ रही है।

3- बच्चा किस गति से सीख रहा है।

4- यदि बच्चे में अपेक्षित सुधार नहीं है तो इसके लिए क्या प्रयास किया जाय।

**उपचारात्मक शिक्षण का अर्थ :-** निदानात्मक परीक्षणों द्वारा छात्रों की समस्या या कठिनाई के कारणों का ज्ञान हो जाने के उपरान्त उपचार हेतु किये जाने वाला शिक्षण उपचारात्मक शिक्षण कहलाता है।

शिक्षा शब्दकोश में उपचारात्मक शिक्षण के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है, "उपचारात्मक शिक्षण एक छात्र की कमी निम्न योग्यता के कारण नहीं को अंशतः अथवा पूर्णतः दूर करने के लिए उपदिष्ट विशेष शिक्षण है।"

क्लेंअर तथा जोन्स के अनुसार, "उपचारात्मक शिक्षण मूलतः एक उत्तम शिक्षण विधि है जो छात्रों को अपने मानसिक स्तर के अनुरूप प्रगति करने का अवसर देती है। यह उसे पैरणा की आन्तरिक विधियों के द्वारा उसकी क्षमता के अनुसार उच्च मापदण्ड तक पहुचाती है। यह कठिनाइयों के सतर्कतापूर्ण निदान पर आधारित तथा छात्रों की आवश्यकताओं एवं रुचियों के अनुकूल होती है।

Scanned with CamScanner